श्रम विभाग

आदे श

दिनांक 15 फरवरी, 1985

सं. ग्रो. वि./ग्रम्बाला/192-84/5598.—-वृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. के० के० कम्पनी, 212 इन्डस्ट्रीयल एरिया, पंचकुला (ग्रम्बाला), के श्रीमिक श्री राकेण राय तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद जिल्ति मामले में कोई ग्रीखोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधेसूचना सं. 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिविनाम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादशस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री राकेश राथ की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. घो.वि./ग्रम्बाला/94-84/5604.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. मैंनेजिंग डायरेक्टर, हरियाणा पिछड़े वर्ग कल्याण निगम, एस.सी. ग्रो. 813-14 सैक्टर-22ए, चण्डीगढ़ (2) जिला प्रबन्धक, हरियाणा पिछड़े वर्ग कल्याण निगम, काशी नगर, ग्रम्बाला शहर, के श्रावक श्री लाजपत राय तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित नामले में कोई ग्रीशोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, भव, भौद्योगिक विवाद भिवित्वम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा के उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला, को विवादग्रस्त या उसके सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उवत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा संबंधित भामला है :—

क्या श्री लाजपत राय की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो. वि./श्रश्वाला/221-84/5611. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राग है कि मै. इंजनियर एण्ड कन्सलटैन्टस, 200 एच. एम. टी. इन्सीलरी यूनिट, पंचकुला के श्रमिक श्री जागर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है :

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, भीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की झारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रंगेल, 1984, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के भवीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, की विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए किर्दिष्ट करते हैं, जो कि इक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अपवा संस्वन्धित मामला है:—

क्या श्री जागर सिंह की सेवाशों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो.वि./ग्रम्बाला/7-84/5617.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० निदेशक हैल्थ सर्विसस हरियाणा चण्डीगढ़। (2) मुख्य चिकित्सा ग्रधिकारी, ग्रम्बाला शहर, के श्रमिक श्रीमित सुनीता तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिन सामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की बारा 10 की उपधारा (1) के छण्ट (ग) द्वारा प्रदान की गई अवितयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रष्टिस्चना से. 3(44)-84-3-श्रम, टिनांक 18 अप्रैल. 1984, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्वाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा, मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद सिंस्संगत प्रथमा संबंधित मामला है —

क्या श्रीमती सुनीता की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है?

सं. ग्रो. वि./श्रम्वाला/30-84/5699.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़ (2) महा प्रबन्धक, हरियाणा राज्य परिवहन, कैथल (हरियाणा) केश्रमिक श्री बलबीर सिंह तथा उसके अबन्धकों के महय इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, भीडोगिक विवाद भिधितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिधित्वना सं. 3(44)84-3-अस, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त ेम्रिधितियम की बारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायितिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बंधित मामला है:—

क्या श्री बलबीर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० भ्रो० वि/ग्रम्बाला/231-84/5706.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० मैनेजिंग डायरेक्टर, हिंदी हरियाणा स्टेट फैडरेशन भ्राफ कन्जूमर्र्ज, को० भ्रो० होल-सेल स्टोरज, लि०, एस० मी० भ्रो० 1014-15, सैक्टर 21 बी, चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री गियान मिह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

आरं चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिग्ट करना वार्डनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब भौद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शदितयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविस्चना सं० 3 (44) 84-3-श्रम दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिविनियम की धारा 7 के ग्रिवीन गठित श्रम न्यायालय श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिए। निर्दिट करते है जो कि उक्त प्रबन्ध के तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या दिवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है।

क्या श्री गियान सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिमांक 18 फरवरी, 1985

सं ग्रो विविध्या की स्थाप के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज इण्डिया फीर्ज एण्ड ड्राफ्ट स्टेम्पिंग लि॰, 13/3, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री सदा नन्द तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

ग्रौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिष्य हैत निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसिलिये. ग्रंब. ग्रीद्योगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) में खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शिवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिक्षणा सक 5415-3-अम, 68/1545 किनाव 40 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिस्चना सं, 11495-जि-श्रम/57/11245 दिनाक 7 फण्डरी, 1958 द्वारा उसते अधिनियम के धारा 7 के अधीन गठित अमन्यायालय, फरीदाबाद को विवादगरण राज्य उसके सम्बद्धित में ने विख्य मामका ने विवादगरण राज्य उसके सम्बद्धित में ने विख्य मामका ने स्वाद्धित करने हैं, जो विचादश्य प्रवस्त्र अभिकाद बीच या तो विवादगरण मामका है या विचाद से सम्बद्धित सम्बद्धित मामका है :--

क्या श्री सदा नन्द की सेदाफ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत वा हकदार है !